भारत की मिट्टी - प्रकार और उसका वितरण
(Indian Soil - Type and its distribution)

धरातल की ऊपरी असंगठित परत को मृदा अथवा मिट्टी कहते हैं। इसमें पेड़-पौधों के उगने की सभी आवश्यक तत्व पाये जाते हैं। यही कारण है कि प्रकृति का यह सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। कृषि पूर्णतः मिट्टी पर ही आधारित होती है जो मानव जाति का भोजनका आधारशिला है। इसके अलावा भवन निर्माण (ईंट) में मिट्टी की महत्वपूर्ण है।

मिट्टी का निर्माण प्रायः चट्टानों के विघटन से होता है। धरातल पर सबसे पहले आधारी शैलें होती हैं। कालांतर यही आधारी शैलें विघटित होकर विखंडित शैलों में बदल जाती हैं। यही शैलें अवमृदा का रूप ले लेती हैं। अब अवमृदा में जीवों तथा पौधों के गले सड़े अवशेष मिल जाते हैं तो इसे ही ऊपरी मिट्टी (Top soil) कहा जाता है। जैसा कि बगल के चित्र में मृदा निर्माण प्रक्रिया को दर्शाया गया है। मिट्टी की निर्माण प्रक्रिया में शैलों की प्रकृति, जलवायु, वनस्पति आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। ईंच मोटी मिट्टी के निर्माण में सहस्त्र वर्ष लग जाते हैं। यही वनस्पति मिट्टी में ह्यूमस की मात्रा को निर्धारित करती है।

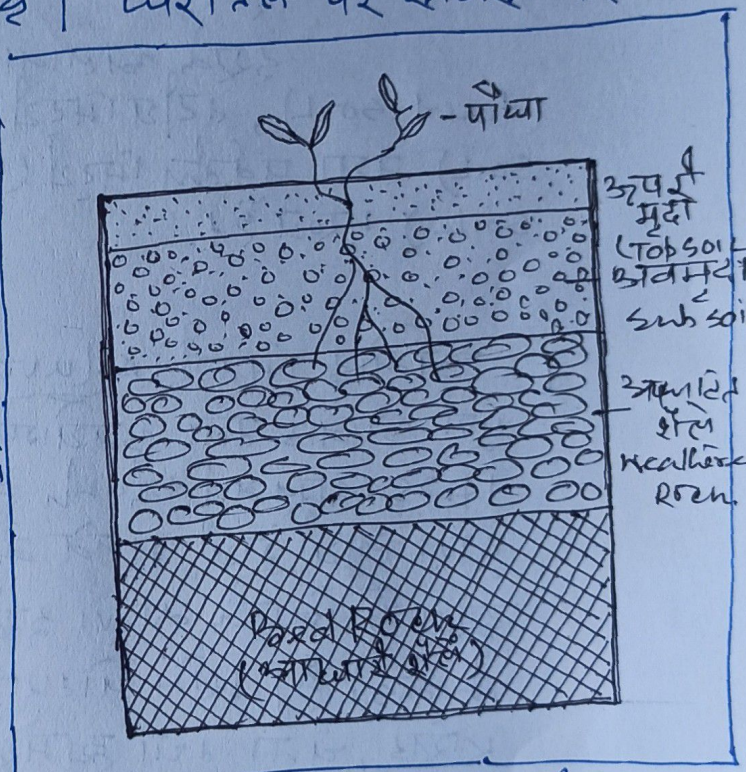

भारत की मिट्टियाँ (Indian soil)

भारत में वैसे तो 16 प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती है। लेकिन उनमें मुख्यतः 4 प्रमुख मिट्टियाँ देश के अधिकांश भाग पर फैली है। 1963 ई० में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 4 प्रमुख मिट्टियों का उल्लेख किया है। नीचे भारत की प्रमुख मिट्टियों को दर्शाया गया है –

1) जलोढ़ मिट्टी – (Alluvial soil)
2) काली मिट्टी (Black soil)
3) लैटेराइट " (Laterite soil)
4) लाल मिट्टी (Red soil)

इसके अलावा मरुस्थलीय (desert-soil), तटीय मिट्टी (coastal soil) तथा पर्वतीय मिट्टी (Mountainous soil) मुख्य है।

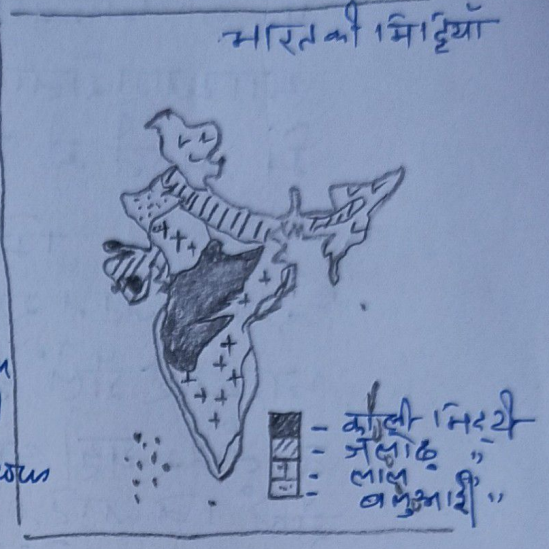

1. जलोढ़ मिट्टी (Alluvial soil) – यह देश की सबसे महत्व पूर्ण उपजाऊ तथा उपयोगी मिट्टी है। इसका विस्तार लगभग 14.25 लाख वर्ग कि०मी० में है। प्रायः ये मिट्टियाँ नदियों द्वारा लायी गयी मलबे के निक्षेप से बना है जिसके कारण इसे वाहित मिट्टी भी कहते है। इसमें पोटाश, फास्फोरिक एसिड, चूना तथा ह्यूमस प्रचुर मात्रा में पाये जाते है। चावल, गन्ना, सब्जी जूट, मक्का; तिलहन आदि फसलों की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है।

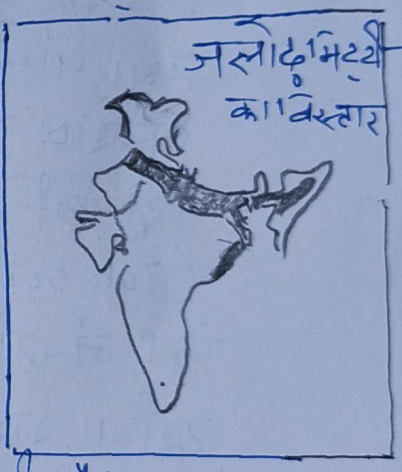

ये मिट्टी दो प्रकार के होती है –

1) नवीन जलोढ़ मिट्टी (New Alluvial soil)
2) प्राचीन जलोढ़ मिट्टी (Old Alluvial soil)

नयी जलोढ़ नदियाँ घाटी के निचले बेसिनों में पायी जाती है जहाँ बाढ़ का पानी पहुँचता है। प्रतिवर्ष नयी जलोढ़ मिट्टी के जमने से इसमें ह्यूमस आधिक मात्रा में पाया

प्राचीन मिट्टी को बाँगर कहा जाता है जो नदियों के ऊपरी भागों में पायी जाती है। यहाँ बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता है। इसलिये यह अपेक्षाकृत कम उपजाऊ होती है। कहीं-कहीं पर लवणीय और क्षारीय प्रस्फुटन के कारण इनमें रेह के जमाव पाये जाते हैं।

भारत में यह मिट्टी उत्तरी भारत के मैदान, तटीय भाग, डेल्टाई प्रदेशों में पायी जाती है।

काली मिट्टी (Black soil)

इसे काली कपास मिट्टी भी कहते हैं। इसका निर्माण बेसाल्टिक चट्टानों के अपक्षय से हुआ हुआ। बेसाल्टिक चट्टानों का रंग काला होने के कारण काली मिट्टी कहलाती है। इस मिट्टी में लोहा, चूना, कैल्शियम पोटाश, अल्यूमिनियम तथा मैग्नेशियम कार्बोनेट की प्रचुरता पायी जाती है। वहीं नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा जीवाश्म पदार्थ की कमी पायी जाती है।

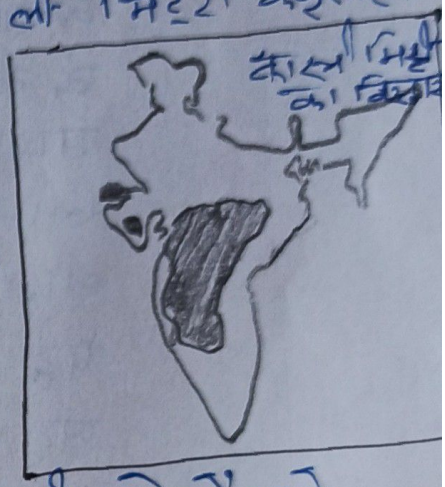

कपास के अलावा गेंहू, मूंगफली ज्वार बाजरा, तम्बाकू तथा गन्ना की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। यह मिट्टी देश के लगभग 5 लाख वर्ग किमी क्षेत्र पर फैला है। सम्पूर्ण महाराष्ट्र, कर्नाटक उत्तरी-प० भाग, द० म० गुजरात तथा द० मध्य प्रदेश में इस मिट्टी का विस्तार है।

लाल मिट्टी (Red soil)

यह देश दूसरा महत्वपूर्ण मिट्टी है। जिसका विस्तार लगभग 6.1 लाख वर्ग किमी पर है। इसका निर्माण प्राचीन क्रिस्टलीय एवं रूपांतरित चट्टानों (ग्रेनाइट और नीस) के अपक्षयित होने से हुआ है। इसमें लोहांश की मात्रा होने के कारण इसका रंग लाल होता है। इसलिए

इसे लाल मिट्टी कहा जाता है। इस मिट्टी में ह्यूमस, पोटाश, नाइट्रोजन तथा फास्फेट की कमी पायी जाती है वहीं दूसरी ओर इस में लोहा, एल्युमिनियम प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

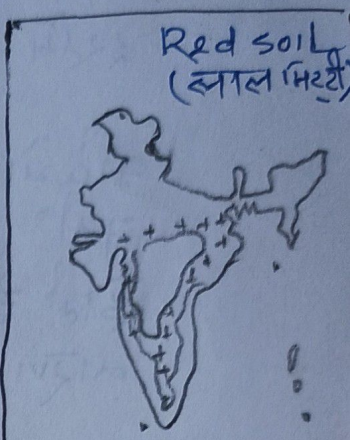

वैसे यह मिट्टी कृषि के लिये उपयुक्त मिट्टी नहीं है लेकिन निचले भागों में जहाँ सिंचाई की सुविधा पायी जाती है वहाँ मोटे अनाज, दाल, आलू मूंगफली की खेती होती है।

4. लैटेराइट मिट्टी (Laterite soil)

यह मिट्टी निक्षालन (leaching) से बनती है जिसके कारण मिट्टी की उर्वरा शक्ति जल के साथ बहकर मिट्टी के नीचे के परतों में चली जाती है। इसमें भी लोहांश की मात्रा पायी जाती है इसकारण इस रंग लाल होता है। मुख्य रूप से ये मिट्टी देश के प्रायद्वीपीय भाग में पठारों के ऊपर भाग में मिलते हैं। पूर्वी घाट, पश्चिमी घाट, राजमहल की पहाड़ियों, सतपुड़ा तथा विन्ध्यन पहाड़ियों के शिखरों पर यह मिट्टी पायी जाती है।

इसके अलावा पर्वतीय मिट्टी (पर्वतीय भागों), मरुस्थली मिट्टी (थार प्रदेश), वन मिट्टी (हिमालय क्षेत्रों), क्षारीय मिट्टी यू०पी०, बिहार, हरियाणा, पंजाब एवं महाराष्ट्र के शुष्क प्रदेशों में पायी जाती है।